कामायनी का आधुनिक संदर्भ एवं प्रासंगिकता

डॉ0 सुनीता शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग सेन्ट जॉन्स कॉलेज, आगरा

जयशंकर प्रसाद छायावादी युग के प्रतिनिधि कवि है। छायावादी काव्यधारा मे उनका अग्रगण्य स्थान माना जाता है। इनका जन्म वाराणसी के प्रसिद्ध वैश्य परिवार 'सुंघनी साहू' के यहाँ 1889 में हुआ। बाल्यकाल से ही ये काव्य प्रतिभा के धनी थे, तथा अल्पायु में ही काव्य–रचना करने लगे थे। इनकी प्रारंभिक रचनाएँ ब्रजभाषा मे हैं, परन्तु समय के साथ–साथ इनकी रचना दृष्टि परिष्कृत एवं परिमार्जित होती गई। एवं इसकी परिकल्पना 'कामायनी' नामक महाकाव्य के रूप में अपनी पर्णू गरिमा और सौन्दर्य के साथ साकार हुई।

'कामायनी' निश्चय ही छायावाद की सर्वश्रेष्ठ रचना कही जा सकती है। कामायनी पर्णूतः मानव मन एवं दर्शन से परिपर्णू काव्य है। इसमें अभिव्यक्त जीवन–दर्शन के माध्यम से आधुनिक मानव को अपना जीवन सुखी बनाने हेतु दिशा–निर्देश दिए गये है और आधुनिक जीवन की प्रमुख समस्या का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास कवि ने किया है। साहित्यिक कृतियाँ कभी अप्रासगिक नहीं होती, वे शिक्षाप्रद होने के साथ लोक–कल्याण विधायक होती है। और उसमे घटनाओ के माध्यम से मानव को सदेंश दिया जाता है। कामायनी भी इसका अपवाद नहीं है, वह आज भी उतना ही प्रासगिक है, जितनी अपनी रचना काल मे थी।

आधुनिक मानव के पास धन सम्पत्ति की प्रचुरता तो है किन्तु उसके जीवन में चैन नहीं है। जीवन का सुख उसके लिए आकाशकुसुमवत है। आज विज्ञान के पर्याप्त उन्नति कर करली है, जीवन में सुख–सुविधा के साधन उपलब्ध है किन्तु चैन उसे अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है।

कामायनी की कथा का प्रारम्भ एक भयंकर जल–प्रलय से होता है, जिसमें समग्र देवजाति और उसका वैभव नष्ट हो गया, केवल मनु शेष बच गये क्योंकि वे उस समय नाव में थे। देवजाति ने अपने जीवन में सुख–सुविधाओं के अनेक साधन एकत्र कर लिये थे, जिसके कारण वे अकर्मव्य, अहंकारी एव भाग विलासी हो गये थे। व इतने दम्भी हो गए कि अपने आपको अमर समझने लगे थे। नियति ने उन्हें प्रलय के माध्यम स दण्ड दिया और उनका सब कुछ नष्ट हो गया। इस घटना के माध्यम से प्रसाद जी ने आधुनिक मानव को यह सदेंश दिया है कि भौतिक समृद्धि प्राप्त कर लनेा जीवन का लक्ष्य नहीं है। भौतिक समृद्धि अन्ततः हमें विनाश की ओर प्रेरित करती है, और हम देवताओ की भाँति अकर्मण्य और अहंकारी बन जाते है जिसका दुष्परिणाम हमे विनाश के रूप में झेलना पड़ता है। इसलिए मनु सोच रहे है–

''मौन नाश विध्वसं अंधेरा,
शून्य बना जो प्रकट अभाव। वही सत्य है अरी
अमरते! तुझको यहाँ कहाँ अब ठांव।।''

प्रसादजी ने मृत्यु को जीवन का अंतिम सत्य माना हैं, मृत्यु की गोद में व्यक्ति को चिरशांति प्राप्त होती है। जीवन तो क्षणिक है, जो क्षण भर के लिए चमकता है–

''जीवन तेरा क्षुद्र अंश है,
व्यक्त नील धनमाला मे। सौदामिनी सधि
सा सुन्दर, क्षण भर रहा उजाला में।।''

मनु जीवन से हताश हो गया, उसे लगता है, कि यह संसार नश्वर है, अतः वे अकर्मण्य हो जाते हैं, और वह समझते है कि जीवन की समस्याओ ंका समाधान नहीं हो सकता और व्यक्ति को कभी सफलता मिल ही नहीं सकती–

''किन्तु जीवन कितना निरूपाय, लिया है देख, नहीं
संदेह।
निराशा हैं जिसका परिणाम,
सफलता का वह कल्पित गेह।।''

प्रसाद जी कहते है कि पलायनवादी प्रवृत्ति ही मनुष्य को अकर्मण्य बनाती है। इसे दूर करने के लिए प्रसाद जी ने श्रद्धा के द्वारा मनु को संसार की सत्यता का बोध कराया उन्हे ंअकर्मण्य न बनने की प्रेरणा दी। वस्तुतः प्रसादजी ने जिस समय कामायनी की रचना की, उस समय देश में स्वतन्त्रता सग्रांम चल रहा था तथा देश को ऐसे नवयुवकों की आवश्यकता थी जो स्वतन्त्रता की देवी पर अपने जीवन का बलिदान दे सकें। इसलिए कामायनी मे ंप्रवृत्तिमार्गी जीवन दर्शन का संदेश दिया गया है। इसलिए श्रद्धा मनु से कहती है–

''काम मगंल स ेमण्डित श्रेय, सर्ग इच्छा का है
परिणाम।
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल, बनाते हो असफल भव
धाम।।''

निश्चय ही कामायनी हमें सतत् जागरूक बनाकर कर्मण्यता की प्रेरणा देती है।

प्रसादजी ने कामायनी में बताया है कि जीवन में आनन्द की प्राप्ति तभी हो सकती है, जब व्यक्ति हृदय और बुद्धि का सतुंलित समन्वय करे। बहुत अधिक भावुक और सिर्फ बुद्धि से भी आनन्द प्राप्त नहीं होता है। व्यक्ति को आनन्द तभी प्राप्त हो सकता है जब वह अपने जीवन में हृदय और बुद्धि की समरसता का सचांर करता है। इसलिए प्रसाद जी ने कहा है कि मानवता ओर समरसता को पुनः स्मरण करने की आवश्यकता है और प्रत्येक मनुष्य समरसता का अधिकारी है। प्रसाद जी के अनुसार–

''नित्य समरसता का अधिकार, उमड़ता कारण जलधि
समान।
व्यथा से नीली लहरों बीच, बिखरते सुख मणि गण
द्युतिमान।।''

प्रसाद जी का मत है कि जहाँ विषमता है, वहाँ समरसता नहीं है और जहाँ समरसता है, वहाँ विषमता का कोई अस्तित्व नहीं है।वर्तमान कालीन विषमताओ ंसे मुक्ति पाने के लिए प्रसाद जी ने कामायनी मे ंजो समाधान प्रस्तुत किए है वह न केवल दर्शन का विषय है, अपितु व्यवहारिक रूप में प्रस्तुत होने के कारण अत्यन्त उपयोगी बन पड़ा है। प्रसाद जी ने सभी क्षेत्रों मे ंसमरसता स्थापित करने पर जोर दिया है। सुख और दुख की समरसता, हृदय और बुद्धि की समरसता तथा इच्छा, ज्ञान एवं क्रिया की समरसता करने पर ही जीवन में आनन्द की उपलब्धि होती है बिडम्बना यह है कि इन तीनों में समन्वय नहीं हो पाता और जीवन दुःखी रहता है–

''ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है, इच्छा क्यों पूरी हो
मन की। एक दूसरे से न मिल सके,
यह विडम्बना है जीवन की।।''

व्यक्ति यदि आनन्द प्राप्त करना चाहता है तो निश्चय ही उसके इच्छा, ज्ञान और क्रिया का सामजस्य अपने जीवन में करना पडगे़ा।

प्रसादजी कहते हैं कि मानवता के विकास मे ंचाहे कितनी भी बाधाएँ क्यों न आये, उसे उन बाधाओ ंपर विजय प्राप्त करनी है। पराजित होने पर साहस नहीं खोना है। निरन्तर दुगने साहस से सफलता की ओर आगे बढ़ना है। परमात्मा का यह मंगल वरदान सर्वत्र गूँज रहा है। कि शक्तिशाली बनकर विजय श्री का वरण करो। यहीं कामायनी का संदेश है–

''और यह क्या तुम सुनते नहीं, विधाता का मंगल
वरदान।
शक्तिशाली हो, विजयी बनो, विश्व में गूँज रहा
विजयगान।।''

शक्ति के कण इधर–उधर बिखरे हुए है, मानव को उनका समन्वय करना होगा तभी मानवता की जय होगी।

''शक्ति के विद्युतकण जो व्यस्त, विकल बिखरे हैं हो
निरूपाय।
समन्वय उनका करे समस्त, विजयिनी मानवता हो
जाय।।''

आधुनिक समय मे ंआज जब मनुष्यता अस्तित्व सम्बन्धी सकंट स ेजूझ रही है तो कामायनी का ये संदेश अत्यन्त समीचीन जान पडता़ है–

''औरो ंको हंसते देखे मनु, हसों और सुख
पाओ।
अपने सुख को विस्मृत कर लो, और सबको सुखी
बनाओ।''

इस प्रकार श्रद्धा उनके विश्वासी मन को कर्मशील बनाती है, इसका चित्रण करते हुए महाकवि प्रसाद ने लिखा है–

''डरो मत अरे अमृत संतान, अग्रसर है मंगलमय
बृद्धि
पर्ण आकर्षण जीवन केन्द्र खिंची आवगेी सकल
समृद्धि।।'' कामायनी का वास्तविक प्रासगिकता
इन्हीं अर्थां में निहित है। प्रसाद जी की यह
रचना वस्तुतः मानवता का मूर्त रूप कही जा

सकती है। प्रसाद जी के शब्दों में ''हम यही मंगल कामना कर सकते है कि मानव धर्म वं समरसता का पालन करते हुए निरंतर उन्नति को प्राप्त हो''

निष्कर्ष रूप मे कहा जा सकता है कि कामायनी मे प्रसाद जी ने आधुनिक मानव को सदेंश दिया है तथा विश्व कल्याण की भावना को अभिव्यक्ति दी है। निश्चय ही कामायनी आधुनिक युग का ऐसा महाकाव्य है, जो सदैव मानव जीवन के लिए प्रेरणा बनकर रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सची–

1. जयशंकर प्रसाद – कामायनी
2. डॉ0 हरि शर्मा – कामायनी विमर्श
3. श्री राकेश – प्रसाद और कामायनी (श्रद्धा सर्ग)
4. जयशंकर प्रसाद – कामायनी की भूमिका